श्री मंगल राम प्रेमी (बिजनौर) : अध्यक्ष महोदय, अलीगढ़ के एक गांव में दो बाल्मीकि हरिजनों की हत्या कर दी गई है क्योंकि नाम के आगे 'चौहान' लिख दिया था।

अध्यक्ष महोदय : प्रेमी जी, आप ऐसा करिये कि मुझे यह लिख कर दे दीजिए वैसे यह स्टेट का मामला है।

श्री मंगल राम प्रेमी : दो लोगों को मार दिया गया है ....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप लिख कर दे दीजिए। यहां पर होम मिनिस्टर साहब बैठे हैं ....(व्यवधान) .. इट इज ए स्टेट सब्जेक्ट। ऐसे नहीं होता है।

श्री मंगल राम प्रेमी : साहपुर डेलवी काण्ड तो संसद में लाया जा सकता है दो बाल्मीकि मरने पर उत्तर प्रदेश हिन्दुस्तान के बाहर हो गया। मान्यवर, कम से कम इसको देख तो लीजिए। मुझे पार्लियामेंट में इसके बारे में कहने का मौका तो दीजिए।

अध्यक्ष महोदय : आपने कह तो दिया है।

श्री मंगल राम प्रेमी : उनकी दोनों विधवाएं दिल्ली के अन्दर मिनिस्टरों के घरों के दरवाजे खटखटा रही हैं और उनकी कोई सहायता नहीं कर रहा है।

अध्यक्ष महोदय : आप लिख कर दीजिए।

श्री मंगल राम प्रेमी : दो, दो हत्याएं कर दी गई हैं।

अध्यक्ष महोदय : मुझे आपसे सहानुभूति है, इसलिए मैं आपसे कह रहा हूं। हर एक बात सही नहीं होती है, जो अखबार में लिखी हो। यहां पर माननीय सदस्य यह भी कहते हैं कि खबरों को प्लांट करवा दिया जाता है। इसलिए आप लिख कर दीजिए और मैं पता करवाऊंगा।

श्री मंगल राम प्रेमी : 22 साल के लड़के और उसके पिता को मार दिया गया है और थाने में रिपोर्ट नहीं लिखी जा रही है। ....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बिना वजह यह कर रहे हैं। आप लिखकर भिजवा दीजिए। Let me see. I have to see it. I will find out what is wrong. We shall go into it and pursue this matter. If it has been done, then this is a heirous crime and they will be punished.

12.12 hrs.

MATTERS UNDER RULE 377

(I) NEED TO PROVIDE SPORTS AND COACHING FACILITIES IN RURAL AREAS.

श्री भोखा भाई (बांसवाड़ा) : अध्यक्ष महोदय, मैं नियम 377 के अधीन निम्नलिखित विषय की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं :

भारत एक विशाल देश है, जिसकी 80 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में बसती है किन्तु गांवों में खेल मैदान खेल यंत्र व ट्रेन्ड कोचिंग भी इतनी ही अधिक संख्या में सुलभ नहीं हैं जितने वहां पर खेलने वाले हैं। कहने को तो 1972 से अखिल भारतीय खेल-कूद परिषद् की सिफारिश पर केन्द्रीय शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय ने अखिल भारतीय ग्रामीण खेल-कूद प्रति-

योगिता आयोजित करना प्रारम्भ कर दिया था, परन्तु संबंधित मंत्रालय ने ग्रामीण इलाकों में आज तक कोई खेल मैदान निर्मित नहीं किये हैं।

12.13 hrs.

[MR. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair*.]

सरकार जितना ग्रामीण खेल-कूद के आयोजन में उत्सुकता दिखाती है उतनी ही खेल-कूद सुविधाएं, खेल के मैदान, ट्रेन्ड कोचिंग और अन्य खेल यंत्र भी जुटाने चाहियें। अन्यथा वर्तमान भारतीय खेलों के गिरते स्तर को कोई रोक नहीं सकता। वह दिन दूर नहीं जब ग्रामीण खेल जगत से हाकी के जादूगर मेजर ध्यानचन्द, अजीतपाल जैसे श्रेष्ठ खिलाड़ियों का मिलना दुर्लभ हो जायेगा। कुछ खेल जैसे कब्ड्डी व कुश्ती की बात दूसरी है जो कहीं भी जोती हुई जमीन पर खेले जा सकते हैं, परन्तु अन्य खेल जैसे हाकी, फुटबाल, वास्केट बाल, खो-खो, जिमनास्टिक व तैराकी तो बिना किसी मैदान के खेले नहीं जा सकते।

ट्रेन्ड कोचेज और खेल सामग्री एकत्र करने की बात दूर रही, ग्रामीण कोचेज योजना के अन्तर्गत एस० आई० एस० पटियाला के मातहत भारत के विभिन्न भागों में कुछेक कोचिंग सैन्टर जरूर कार्यरत हैं जो नेहरू युवक केन्द्र के नाम से जाने जाते हैं परन्तु देश में बसी ग्रामीण आबादी को नजर-अन्दाज करें तो इन केन्द्रों के तहत कार्यरत कोचेज की संख्या नहीं के बराबर है। इस समय लगभग 428 कोचेज इन केन्द्रों में कोचिंग कर रहे हैं जो इस विशाल ग्रामीण क्षेत्र को देखते हुए आटे में नमक के बराबर भी नहीं है जबकि 90 लाख की आबादी वाले देश पूर्वी जर्मनी में लगभग 90 हजार कोच हैं। यदि दिल्ली का ही उदाहरण लें तो केवल 4 नेहरू युवक केन्द्र हैं जहां पर 3-4 खेलों में ही कोचिंग उपलब्ध है व विभिन्न केन्द्रों पर जाकर कोचिंग देना पड़ता है। जब सरकार प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की खोज हेतु ग्रामीण खेलों का आयोजन करती है तो 90 प्रतिशत खिलाड़ी गलत तरीके से टेक्निक को डेवलप किये पाये जाते हैं। इसलिए जब तक प्राइमरी स्तर से कोचिंग का सिलसिला शुरू न होगा चेम्पियन बनने के सपने साकार होने मुश्किल लगते हैं। यदि खेलों के स्तर को ऊंचा उठाना है तो ग्रामीण इलाकों में खेल सुविधाएं उपलब्ध करानी होंगी, खेलों का माहोल पैदा करने के लिए स्टेडियम खोलने होंगे, आधुनिकतम खेलों के साज सामान जुटाने होंगे, खाली दर-दर की ठोकरें खा रहे एन० आई० एस० को चेंज कर कोचिंग कार्यों में लगाना होगा। कम से कम ब्लाक स्तर पर बड़े-बड़े कोचिंग सैन्टर खोलने होंगे। तभी हमें ग्रामीण क्षेत्र से प्रतिभाशाली खिलाड़ी मिल सकेंगे जो देश की खोई हुई इज्जत को वापिस दिला सकेंगे।

(ii) ALLEGED SHORTAGE OF STORES AFFECTING TELECOM. FACILITIES IN RURAL AREAS.

PROF. NARAIN CHAND PRASHAR (Hamirpur): The serious shortage of stores has adversely affected the expansion of telecom network in the rural area of the country. According to an assessment 75 per cent of the total population of the country which lives in the rural area has only 6 per cent of the existing telecom facilities. The shortage of essential items like stalks, brackets, and other line material have held up a number of projects. Thus, while in reply to Unstarred Question No. 1947 dated 20th July, 1982, the Hon'ble Minister of State for Communications, has